आग्रहहीन गहन चिन्तन का द्वार हमेसा खुला रहे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

यह पंक्ति अनाग्रही दृष्टि को अपने में समेटे हुये है– इसको इस रूप में देखा जा सकता है। इसकी अगली पंक्तियां हैं–'

आग्रहहीन गहन चिन्तन का द्वार हमेसा खुला रहे।

जागे स्वयं जगायें सबको हो यह दृढ़ संकल्प हमारा

प्रभो तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण हो सारा।।

चिन्तन का द्वार हमेसा खुला रहना चाहिए। आज का युग वैश्वीकरण का युग है। इस युग में संचार माध्यमों के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने में घटने वाली किसी भी घटना का ज्ञान तुरन्त हो जाता है। हमारी मान्यता किसी भी विचार से बंधकर नहीं होनी चाहिए। जैनदर्शन के स्याद्वाद और अनेकान्तवाद में सापेक्षता की बात कही गई है। महान वैज्ञानिक आइन्सटीन ने सापेक्षवाद को सृष्टि का नियामक माना है। बिना सापेक्षता के जीवन चल नहीं सकता। सृष्टि सापेक्षता के आधार पर चलती है। मैंने कहा वही सत्य है, मेरा धर्म सत्य है, यह आग्रह है। मेरा कथन भी सत्य है, मेरा धर्म भी सत्य है, यह अनाग्रही चिन्तन है। जैसे कोई कहे हमे बोम्बे जाना है बोम्बे का रास्ता सूरत भी जाता है अहमदाबाद भी जाता है तो अहमदाबाद और सूरत होकर बोम्बे जाना कथन सापेक्षता है। सापेक्षता में विवाद नहीं रहता। सभी धर्म अपने–अपने तरीके से सत्य है। किसी को किसी धर्मपालन में आपत्ति नहीं होनी चाहिए। जो व्यक्ति अनाग्रह को छोड़कर आगे बढ़ता है वह सापेक्षता को स्वीकार करता है। आग्रहीन गहन चिन्तन में किसी के साथ टकराव नहीं होता। जब निर्णय सर्वसम्मत्ति से होता है तो टकराव नहीं होता। अच्छा राजनेता वह होता हैं जो सबको सुनने सहने की क्षमता रखता है। व्यक्ति

के अन्दर सहनशीलता होनी चाहिए। आज विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच में विवाद क्यों बढ़ रहा है। विवाद इसलिए बढ़ रहा है कि वे दल अपनी विचारधारा दूसरों पर थोपते हैं। आग्रह से टकराव बढ़ता है। अनाग्रह से शक्ति प्राप्त होती है। प्रजातन्त्र में अनाग्रह को महत्व दिया गया है। अनाग्रह से तनाव नहीं रहता। जब टीम भावना से कोई कार्य किया जाता है तो प्रसन्नता मिलती है। यदि क्रिकेट की टीम के सभी सदस्य अपनी–अपनी ढ़पली अपना–अपना राग गानें लगें तो टीम जीत नहीं सकती। जितने के लिए सामंजस्य आवश्यक होता है। कौनसा खिलाड़ी किस क्रम पर खेलने के लिए जायेगा यह पूर्व निश्चित होता है। खिलाड़ी इसी मानसिकता के साथ क्रिकेट मैदान में जाते हैं और उत्साह से खेलकर विजय प्राप्त करते हैं। खिलाड़ियों के बीच में एक सामंजस्य होता है। तभी जीत संभव होती है। भारत में कहीं कहीं साम्प्रदायिक या जातिय संघर्ष हुआ करता है। वे सभी तुच्छ घृणा पर आधारित हैं, जो अवास्तविक और जघन्य हैं। कोई ब्राह्मण, बनिया या मुसलमान होने से बुरा नहीं हो सकता, बुरा होता है, बुराई से। यह बुराई ही, व्यक्ति को घृणा से भरने वाला पाप है अतः व्यक्ति के स्थान पर बुराई को ही मिटाने का यत्न होना चाहिये।

जीवन की धारा में जो अन्धाधुन्ध घृणा का भाव भरता जा रहा है, उसे तुरन्त रोकना आवश्यक है, अन्यथा वैयक्तिक जीवन ही नहीं, सारा राष्ट्र और विश्व ही खतरे में पड़ जाएगा। आज मानव की दृष्टि में मानव का पतन हो चुका है। वह व्यक्ति को कीट पतंग से अधिक कुछ भी समझने के लिए तैयार नहीं। आत्मीयता जो मानव का एक विराट चेतना स्पन्दन है, आज लगभग जड़ बन चुका है। घृणा के तपेदिक से पीड़ित मानव जीवन की जो आज स्थिति है वह किसी से छिपी हुई नहीं है। यह रोग आज घर में व्याप्त है। घृणा के ही प्रभाव से सत्य और न्याय की सरेआम हत्या होती है। सद्‌गुण की अवहेलना होती है और योग्य व्यक्ति का भी तिरष्कार होता है। घृणा से व्याप्त विष को नष्ट करने के लिए चिन्तन मनन तो करना चाहिये। घर घर में फैलाना चाहिये– कोई छोटा नहीं, कोई तुच्छ नहीं, कोई पराया नहीं। अपनत्व और सम्मान का जितना अधिक विस्तार होगा, टकराव का विष उतना ही नष्ट होता हुआ चला चाएगा। सामाजिक संरचना के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रमों का सर्वाधिक महत्व है। समाज जो भी हो निश्चय ही वह जबर्दस्त शक्ति का भंडार होता है। शक्ति का व्यय नहीं

करेगा तो व्यय होता सामर्थ्य गलत कार्यों की तरफ मुड़ जाएगा। समृद्धि का कारण मद्यपान, माँसाहार शिकार, जुआ सट्टा, परस्त्री गमन आदि पापों का सामाजिक निषेध है। आवश्यकता है समाज में जागृति लाने की। पूरे देश में सामाजिक संगठनों के माध्यम से रीतिरिवाजों में सुधार आना चाहिये। ये ऐसे सरल और अल्पव्ययी होने चाहिये कि समाज में गरीब से गरीब व्यक्ति भी इन व्यवहारों को आसानी से साध ले। वह समाज अवश्य पतित हो जाता है जहां ये व्यवहार भारी और कष्ट साध्य हो जाते हैं। जैसा कि कहा जाता है समाज को संगठित होकर अतिव्यय को रोकना चाहिये। क्षमापना से जहां परिवेश में व्याप्त टकराव का अन्त हो जाता है वहां जीवन की अनेक कठिनाइयों का भी उसमें समाधान है। आज भी हम देखते है कि दो देशों के बीच कभी सीमा विवाद को लेकर कभी किसी आर्थिक मामलों को लेकर टकराव की स्थिति बन जाती है। अगर स्थिति का सही ढंग से निपटारा न हो पाया तो दो देशों के बीच युद्ध की संभावना प्रबल हो जाती है। भारत एक ऐसा राष्ट्र है जो अपने पड़ोसी देशों के साथ मैत्री भाव और समता, सहअस्तित्व की नीति अपनाता